पाठ 17

किशोर वय : मर्यादित व्यवहार

मर्यादित किशोर वय का तात्पर्य ''सुरक्षित, संयमित, मर्यादित एवं सामाजिक रूप से स्वीकृत सम्बन्धों से है। चरित्रवान्, विद्धान, समर्थ एवं ऊर्जावान नागरिक ही राष्ट्र का निर्माण करते हैं। कामुक, आलसी, प्रमादी, निस्तेज, निरूत्साही, कमजोर, भीरू, निराशावादी नागरिकों के द्वारा राष्ट्र कभी भी प्रगति के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारी पारम्परिक, सामाजिक एवं संवैधानिक मर्यादाएं है। यदि हम मर्यादाओं का अतिक्रमण करते हैं तो समाज का संतुलन बिगड़ता है। हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में भी दुख एवं अशान्ति पनपती है। अमर्यादित जीवन से समाज में विघटन, भय एवं अशान्ति पैदा होती है। अतः यौन सुख के लिए भी निर्धारित मर्यादाओं एवं परम्पराओं का हमें पालन करना चाहिए अर्थात एक सीमा में रहकर हमें काम सुख को भोगना चाहिए अन्यथा परिणाम बहुत ही खतरनाक हो सकते हैं। यौन व्यवहार के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर हमें अवश्य चिन्तन करना चाहिए। यौन व्यवहार यदि असंयमित होता है तो वही दुराचार, व्यभिचार एवं अनाचार जैसे शब्दों द्वारा व्यवहृत होता है। सम्पूर्ण सृष्टि पर यदि दृष्टि डाली जाए तो हम यह पाते हैं कि मनुष्य को छोड़कर शेष सभी प्राणी यौन व्यवहार केवल मात्र सन्तति उत्पत्ति के लिए करते हैं।

अनउत्तरदायित्वपूर्ण यौन व्यवहार का परिणाम रोग, दुख, अवसाद, आलस्य, प्रमाद, भय एवं अशान्ति होता है। प्रेम का सम्बन्ध हमारी आन्तरिक हार्दिक संवेदनाओं से है। एक मां पुत्र से, गुरू शिष्य से, मित्र मित्र से एवं भाई का बहन से गहरा प्रेम होता है परन्तु वासना लेश मात्र भी नहीं होती है। अतः विद्यार्थी काल में किशोर एवं किशोरियों का एक दूसरे के साथ मित्रवत प्रेम होना चाहिए। वासना प्रेम को मिटाती है, बढ़ाती नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में विद्यमान आन्तरिक ऊर्जा व्यक्ति को बल, पराक्रम, शौर्य, धैर्य, ओज, तेज, शक्ति, साहस, स्वाभिमान एवं मेधा–प्रज्ञा देती है। यह आन्तरिक शक्ति जब उर्ध्वगामी होती है तो व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास होता है।

एक बार किसी महात्मा से एक व्यक्ति ने पूछा कि प्रभु इन्सान और पशु में क्या अन्तर है ? महात्मा बोले कि ''इन्सान दो पैरों पर चलता है और पशु चार पैरों पर''। इस उत्तर पर उस व्यक्ति को आश्चर्य हुअ और उसने कहा कि ''प्रभु यह अन्तर तो सर्वविदित है इससे क्या फर्क पड़ता है।'' महात्मा बोले ''वत्स, जब मनुष्य दो पैरों पर चलता है तो पहले उसका मस्तिष्क आता है, फिर ह्रदय, उसके बाद पेट व अन्त में जननेन्द्रियाँ। परन्तु पशु के चार पैरों पर चलने पर उसक सभी अंग एक उर्ध्वाधर रेखा में रहते हैं जिससे उनकी प्रायिकता निर्धारित नहीं की जा सकती। यही कारण है कि मनुष्य प्रत्येक समय, पहले दिमाग से सोचता है, उसके पश्चात् उसकी भावनाएँ होती हैं, फिर वह भौतिकता की ओर आकृष्ट होता है और अन्त में उसकी वासनाएँ आती हैं। परन्तु पशु के लिए विचार, भावना, भूख और वासना सभी एक ही स्तर पर रहते हैं। उसके लिए कहीं कोई अन्तर नहीं होता।

सामाजिक व्यवस्था, जीवन विज्ञान एवं मनोविज्ञान के अनुसार अध्ययनकाल पूरा होने के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होकर अपने जीवनसाथी के साथ ही यौन व्यवहार उचित है एवं उत्तरदायित्वपूर्ण है।

भारतीय ऋषि मुनियों ने जीवन को चार भागों में विभक्त किया जिनको चार आश्रम कहते है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास। इन चार आश्रमों के कार्य भी निर्धारित किए वही कार्य इन चार अवस्थाओं में करने से राष्ट्र में निर्माण, विकास, एवं सर्वाधिक सुख उत्पन्न होता है। ब्रह्मचर्य आश्रम अर्थात विद्यार्थी जीवन अध्ययन, शोध, खेलकूद, प्रतियोगिता, बल, बुद्धि एवं पराक्रम को बढ़ाने के लिए है। विद्यार्थीकाल स्वयं के विकास पर केन्द्रित है। गृहस्थ आश्रम का लक्ष्य विद्यार्थीकाल में किए गए ज्ञानार्जन के अनुकूल कार्य करने, जीविकोपार्जन हेतु व्यापार, नौकरी, उद्योग या संस्थान चलाते हुए राष्ट्र का विकास करना है। गृहस्थ आश्रम में लगभग 25 वर्ष कार्य करने

के बाद पुनः समाजसेवा की ओर केन्द्रित होकर आगे बढ़ना ही वानप्रस्थ एवं इसके बाद स्वयं को केन्द्र में रखकर समाज, राष्ट्र एवं विश्व कल्याण के लिए कार्य करने का विधान है। सम्पूर्ण जीवन में यौन व्यवहार एक हिस्सा मात्र है। जीवन का मुख्य उद्देश्य कामवासना नहीं अपितु समाज एवं राष्ट्र की सेवा करना है। अतः असमय में यौन व्यवहार शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास की धारा को अवरूद्ध कर देता है। असुरक्षित एवं बहुसंगी यौन व्यवहार एड्स जैसी घातक बीमारियों का कारण बन जाता है। अमर्यादित यौन व्यवहार से अपमान, अपयश एवं आत्मग्लानि पैदा होती है। विद्यार्थीकाल यौन व्यवहार के लिए नहीं अपितु चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, बल, बुद्धि पराक्रम, शौर्य, साहस एवं स्वाभिमान की वृद्धि के लिए है। उत्तरदायित्वपूर्ण यौन व्यवहार के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना जरूरी है –

1 यौन व्यवहार विवाह के बाद सामाजिक व्यवस्था के अनुसार पति–पत्नी को ही करना है।

2 स्वतन्त्रता का अर्थ स्वच्छन्दता, उद्दण्डता या मनमानी करना नहीं है।

3 स्वतन्त्रता हमें पूर्ण विकसित व्यक्तित्व देती है परन्तु स्वच्छन्दता या उद्दण्डता हमारे जीवन के विकास के सम्पूर्ण मार्ग अवरूद्ध कर देती है।

4 आज अधिकांश किशोर व किशोरियाँ स्वतन्त्रता एवं उद्दण्डता में अन्तर न समझ कर उद्दण्डता को ही स्वतन्त्रता समझ बैठते हैं और विकास की बजाए विनाश की ओर अग्रसित हो जाते हैं।

5 इस संकीर्ण मानसिकता को हमें बदलना होगा और पूरे विवेक के साथ मर्यादित एवं अनुशासित जीवन में आस्था रखते हुए हमें उत्कर्ष के शीर्ष पर पहुंचना होगा तभी देश के ऊर्जावान्, सशक्त, समर्थ, प्रबुद्ध, विवेकशील किशोर व किशोरियों के निरन्तर पुरूषार्थ से शीघ्र ही भारत विकसित राष्ट्रों की श्रेणी मे खड़ा होगा।

हमारे मन में उठने वाले यौन सम्बंधी प्रश्नों को पूछने में हमें झिझकना नहीं चाहिए। इन पर अपने जानकार मित्रों, अभिभावकों या शिक्षकों से चर्चा करनी चाहिए। हो सकता है कि किशोर अपनी सकारात्मक सोच से अपने किसी मित्र की भ्रान्ति को भी दूर कर सकें और उसे उत्तरदायित्वपूर्ण यौन व्यवहार के लिए प्रेरित कर सकें। असुरक्षित व अनुत्तरदायित्वपूर्ण यौन व्यवहार के गम्भीर दुष्परिणाम हो सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- अपने पारिवारिक व सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखकर स्वयं व दूसरों के प्रति जिम्मेदारीपूर्ण यौन व्यवहार को समझना आवश्यक है।
- असुरक्षित व अनुत्तरदायित्वपूर्ण यौन व्यवहार के गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

जानें, समझें और करें

1. निम्नलिखित कहानी को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

मीनू व भूपेन्द्र एक ही कक्षा के विद्यार्थी हैं। दोनों की घनिष्ठता कुछ इस तरह की है कि वे दोनों ही अपने दैनिक जीवन के अनुभवों का आदान–प्रदान करते हैं । एक साथ पढ़ाई भी करते हैं। वे दोनों एक दूसरे को पसन्द करते हैं और एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

- आप मीनू व भूपेन्द्र के सम्बन्ध को क्या नाम देंगे ?

.....

.....

- इनकी मित्रता किस प्रकार के सम्बन्ध पर निर्भर है ?

.....

.....

2. आपके अनुसार उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार में किन बातों का समावेश होना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

3 अनुत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

"जवानी के जोश में जो अपने होश कायम रखता है, वही बुढ़ापे में सुख पाता है।" – लुकमान

"मन, वाणी और शरीर से सम्पूर्ण संयम में रहने का नाम ही ब्रह्मचर्य है।" – महावीर स्वामी